



पाठ – बीस

चींटी

नन्हा, चींटी, पंक्ति, बाँह, साहस, परिश्रम, सूझबूझ, उत्साह, लगन,
चंदा, आलस, निश्चय।



नन्हें - नन्हें पैरों से तुम,
पर्वत पर चढ़ जाती हो।
मुझे बताओ चींटी रानी,
कैसे यह कर पाती हो!

आँखें नहीं तुम्हारी, फिर भी,
पंक्ति बना कर आती हो।
दूर देश तक जाती, फिर भी,
अपने घर आ जाती हो।।

‘साहस और परिश्रम के बल,
मैं सब कुछ कर लेती हूँ।
ले मन में विश्वास धरा यह –
बाँहों में भर लेती हूँ।

सूझबूझ, उत्साह, लगन से,
प्राणी सब कुछ पा सकता।
धरती की तुम बात छोड़ दो,
चंदा तक भी जा सकता ॥

आलस छोड़ो चलो काम पर,
तभी सफलता पाओगे।
काम करोगे तो निश्चय ही,
तुम ऊँचे उठ जाओगे॥”

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थों को समझो :—

नन्हा	=	छोटा।
पर्वत	=	पहाड़।
साहस	=	हिम्मत।
परिश्रम	=	प्रयास, मेहनत।
बाँह	=	बाहु, भुजा।
सूझबूझ	=	सोचने-समझने की बुद्धि।
उत्साह	=	उमंग।
लगन	=	लगाव।
आलस	=	सुस्ती, काम न करने की इच्छा।

2. उत्तर दो :—

- (क) नन्हें पैरों से पर्वत पर कौन चढ़ जाता है ?
- (ख) आँखें न होने पर भी चींटी कैसे आती है ?
- (ग) चींटी कहाँ तक जाकर घर लौट आती है ?
- (घ) चींटी किसके बल पर सब कुछ कर लेती है ?
- (ङ) चींटी किसे बाँहों में भर लेती है ?
- (च) प्राणी सब कुछ कैसे पा सकता है ?
- (छ) चींटी धरती के अलावा और कहाँ तक जा सकती है ?
- (ज) सफलता के लिए किसे छोड़ना आवश्यक है ?
- (झ) ऊँचा उठने के लिए क्या आवश्यक है ?
- (ञ) इस कविता से क्या शिक्षा मिलती है ?
- (ट) चींटी के जीवन के बारे में पाँच वाक्य लिखो ।
- (ठ) मधुमक्खी और चींटी के जीवन में क्या अन्तर है ।
- (ड) हमें उनसे क्या-क्या सीखना चाहिए ?

3. वाक्य बनाओ :—

नन्हा -----
पर्वत -----
पंक्ति -----
साहस -----
विश्वास -----
धरती -----
सफलता -----
निश्चय -----

4. पूरा करो :—

सूझबूझ, उत्साह, लगन से,

..... |

धरती की तुम

..... जा सकता ॥

5. विभिन्न विभक्तियों के साथ 'वे' के रूपों को पढ़ो, समझो और याद करो :—

वे + ने	=	उन्होंने
वे + को	=	उनको, उन्हें
वे + से	=	उनसे
वे + के लिए	=	उनकेलिए
वे + का/के/की	=	उनका/उन्हे / उनकी
वे + में	=	उनमें
वे + पर	=	उनपर